

Class - B.A. Part - I

Sub - Hindi (Hon) Paper - I

Written by Rakesh Kumar
RBGR College Mahabubnagar

(1) हिंदी साहित्य के इतिहास में आकाल
के नामकरण पर प्रकाश डालें।

Ans हिंदी साहित्य के इतिहास में
विद्वानों ने 'आकाल' को अलग-
अलग नामों से पुकारा है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'आकाल'
को 'वीरगाथाकाल' कहा है। इस
संदर्भ में उनका मानना है कि उस
समय के कविगण अपने आश्रयदाता
के वीरता का वर्णन किया करते
थे। उन्होंने अपने हिंदी साहित्य

के इतिहास नामक ग्रंथ में 12
रचनाओं का जिक्र किया है। उनमें
से कुछ इस प्रकार हैं -

'पृथ्वीराज रासो', 'परमाल रासो', 'सुमान
रासो', 'वीरलक्ष्मण रासो', 'कीर्तिलता', 'अवि'।
इन रचनाओं में राजाओं की

वीरता को चित्रांकित किया गया
है। परंतु कुछ विद्वानों का ऐसा
मानना है कि शुक्ल जी का

किया गया नामकरण तर्क संगत
नहीं है। वृद्ध ऐसे ग्रंथ हैं
जो आज उपलब्ध नहीं हैं।

पंडित राहुल सांकृत्यायन ने
'आकाल' को 'सिद्ध सामंत काल'
कहा है। उन्होंने अपनी रचना

'हिंदी काव्य चारा' में 25 सिद्धों
का वर्णन किया है। उनमें से
कुछ नाम इस प्रकार हैं - सरहपा

कन्दर्पा, लक्ष्मी, इति इत्यादि, पंडित
राहुल सांकृत्यायन जी का मानना
है कि हिन्दी की शुरुआत सिद्ध
साहित्य से हुई।
सिद्धों ने बौद्ध धर्म का प्रचार
करने के लिए जो साहित्य जन
भाषा में लिखा था, वह सिद्ध
साहित्य की श्रेणी में आता
है। राहुल जी ने हिन्दी का
प्रथम कवि सरहृषा को माना
है।

डा० रामकुमार वर्मा ने
'आदिकाल' को संचिकाल एवं
चारण काल कहा है। इस संबंध
में उनका मानना है कि हिन्दी
साहित्य के इस काल में भाषा
की विभिन्न प्रवृत्तियों का उद्घाटन
हुआ। सिद्ध साहित्य, जैन साहित्य,
नाथ साहित्य, रासो रासो साहित्य
आदि की काव्य चाराएँ चल रही
थी, अर्थात् इन चाराओं का संगम
चल रहा था। साहित्य की इसी
प्रवृत्ति के कारण डा० रामकुमार
वर्मा ने हिन्दी साहित्य के आदि
काल को 'संचिकाल एवं चारण
काल' कहा।

आचार्य महावीर प्रसाद
द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य के
'आदिकाल' को 'बीज व्रजन काल'
कहा है। क्योंकि उस समय साहित्य
की कोई निश्चित प्रवृत्तियाँ नहीं
थी। उस समय साहित्य अपने
बीजस्वरूप में ही था।

9 आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
ने हिन्दी साहित्य के 'आदिकाल'
को 'वीरकाल' नाम दिया। उनके
इस नामकरण की काफी आलोचना
की गयी। इस संबंध में विद्वानों
का मानना है कि 'वीरकाल'
'शुक्ल जी' का किया हुआ नामकरण
'वीरगाथाकाल' का ही दूसरा नाम
है। अतः मिश्र जी का यह
नामकरण तर्कसंगत नहीं है।
मिश्र वंश ने अपने हिन्दी
साहित्य का इतिहास 'मिश्र वंशु विनोद'
में 'आदिकाल' को 'प्रारम्भिक काल'
कहा है। उन्होंने इस नामकरण में
साहित्य की किसी विशेष प्रवृत्तियों
का उल्लेख नहीं किया है।
डा० ग्रायर्सन ने 'आदिकाल'
को 'चारणकाल' कहा है। उन्होंने
काल को 643 ई. पीछे ले गये है,
जबकि उस समय की किसी चारण
रचना या चारण प्रवृत्ति का उल्लेख
नहीं कर सके। वस्तुतः इस प्रकार
की रचनाएँ 1000 ई. तक मिलती
ही नहीं। अतः ग्रायर्सन जी का
किया गया नामकरण उपयुक्त नहीं
है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने
'आदिकाल' को 'आदिकाल' नाम
से संबोधित किया। इस संबंध
में उनका मानना है कि आदि-
कालीन साहित्य की कोई भी
प्रवृत्तियाँ नहीं हैं।
कहीं वीरों का गुणगान किया

जा रहा था तो कही सिद्ध कवि
बौद्ध धर्म के बज्रयान शाखा का
प्रचार-प्रसार करने के लिए ही
साहित्य की रचना कर रहे थे,
स्पष्ट है कि साहित्य की विभिन्न
प्रवृत्तियों को देखते हुए ही हिंदी
जी ने 'आदिकाल' को 'आदिकाल'
से ही पुकारना उचित समझा।
निष्कर्षित कहा जा सकता है
कि हिंदी साहित्य के इतिहास में
'आदिकाल' नाम ही सबसे उपयुक्त
तर्कसंगत और सही है।